# गीत वही लिख पाता हूँ

निर्मलचंद 'निर्मल'

Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| मूल्य | : | तीस रुपया |
| प्रकाशक | : | म. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन<br>शाखा – सागर (म. प्र.) |
| सर्वाधिकार | : | निर्मलचंद "निर्मल" |
| प्रथम संस्करण | : | पांच सौ प्रतियां / १९९६ |
| मुद्रक | : | पूनम प्रेस, सागर ✆ २११४० |

काव्य संकलन : गीत वही लिख पाता है / निर्मलचन्द "निर्मल"


Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम


| क्र. | | पेज |
|---|---|---|
| १– | हर पथ से पहचान हो गई | १ |
| २– | फिर बसंत आ गया | ३ |
| ३– | बासंती बयार | ५ |
| ४– | आ गया मधुमास | ७ |
| ५– | बरसात का मौसम | ८ |
| ६– | पावस दोहे | १० |
| ७– | गीत गाता चल | १२ |
| ८– | अपनो जो गॉव (बुन्देली) | १३ |
| ९– | हौसले अब और ही कुछ हैं | १५ |
| १०– | काँटों से जब प्यार हो गया | १६ |
| ११– | गीत लिखे हैं इन्तजार में | १८ |
| १२– | पनघट ने कभी न ये सोचा | १९ |
| १३– | कब तक धीर बंधाये | २० |
| १४– | तुम्हारे द्वारे तक आया हूँ | २२ |
| १५– | हम मिलन की बात लेकर आ गये हैं | २४ |
| १६– | तूफान को वरदान ये कैसा मिला है | २६ |
| १७– | विचलित प्रगति | २८ |
| १८– | एक युद्ध १९९१ | ३० |
| १९– | कहते है इसको तकदीर | ३१ |
| २०– | इसीलिए सुर की तलाश है | ३३ |
| २१– | समूचा यान तेरा है | ३५ |
| २२– | इनसे हाथ मिला लो | ३८ |
| २३– | धरा के स्वर मिलाना है | ४१ |
| २४– | चन्दा अपना देश रे | ४३ |
| २५– | गुरुजनों से | ४५ |


Scanned with OKEN Scanner

२६- बुन्देलखण्ड में प्रभात
२७- हिन्दी हिन्दोस्तान की
२८- प्रदूषण से दूर
२९- देवनागरी दोहे
३०- वरदान है होली
३१- गाँव अपना गाँव है
३२- महाकवि पद्माकर
३३- जिन्दगी की गजल
३४- क्या कमाल है
३५- प्यार का मौसम तो हो
३६- मौसम सुहाने हो गये
३७- भूख लगी है हमें रोटी लाओ
३८- राम की चलती नहीं है
३९- मील के पत्थर नहीं कोई
४०- गीत वही लिख पाता है

Scanned with OKEN Scanner